

# Battle of Beha: The Story of Gallantry of Baghpat in Revolution of 1857. बेहा का युद्ध: 1857 की क्रान्ति में बागपत की शर्याय गाथा

**Mohit<sup>1</sup>, Dr Renu Jain<sup>2</sup>**

<sup>1</sup>Research scholar History, IIMT University, Meerut, U.P.

drmohittyagig@gmail.com

<sup>2</sup>Associate Professor History, IIMT University, Meerut, U.P.

renu\_soah@iimtindia.net

## सार संक्षेप:-

बागपत जिसे कभी व्याघ्रप्रस्थ के नाम से जाना जाता था अर्थात् बाघो (शेरो) की भूमि। जिस भूमि ने हमेशा शेरो को जन्म दिया हो वह पावन भूमि बागपत कहलाती है। समय के साथ नाम भले ही परिवर्तित हो गया हो परन्तु आज भी यह बागपत की धरा शेरो को ही जन्म देती है। यह बात 1857 की क्रान्ति में यहा के शेर दिल किसानों ने साबित की थी। उन्होंने अपने पराक्रम से बागपत को अंग्रेजों से मुक्त करा कर ये बता दिया कि क्यों यहा के लोगों ने 12वीं शताब्दी से लेकर 19वीं शताब्दी तक के संघर्षमय काल में भी कभी हार को अपने पास नहीं आने दिया। चोटे जरूर खायी, पर फिर उठ खड़े होने का साहस उन्हें दूसरों से अलग बनाता है। इसलिए यह भूमि क्रांतिवीरों की लंबी श्रृंखला को भी जीवंतता दे रही है। अंग्रेजों के शोषण व अत्याचारों से रोष में आये भारतवर्ष के लोगों ने पहली बार एक बड़े पैमाने पर विदेशी शासन को भारत से उखाड़ फेंकने की पुरजोर कोशिश की थी। 10 मई 1857 को मेरठ की उग्र व पावन भूमि से अंग्रेजों के विरुद्ध इस महान क्रांति का प्रस्फुटन हुआ। उस समय मेरठ का ही अंग रहे वर्तमान जनपद बागपत के क्रांतिवीर सेनानियों, साधारण किसानों व मजदूरों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। अगर इन महान लोगों की सहभागिता पर प्रकाश डाला जाये तो इस क्षेत्र की जनता द्वारा बहुत ही तीव्र और मजबूत तरीके से अंग्रेजों पर आघात किया गया था। इन बागपत के वीरों की वीरता, साहस, और प्रचंडता ऐसी थी कि शत्रु अंग्रेज भी इनकी प्रशंसा करने से खुद को नहीं रोक सकें।

**बीज शब्द** - महासमर, वीरता, किसान, व्याघ्रप्रस्थ

## विषय प्रवेश -

10 मई 1857 में क्रान्ति शुरू होने के पश्चात बागपत में क्रान्ति के नेतृत्वकर्ता शाहमल व उनके साथी किसान सेनानी अंग्रेजों को काफी नुकसान पहुंचा रहे थे। जिसके कारण बागपत के सेनानी अंग्रेजों के निशाने पर आ गये। अतः इनका दमन करने के उद्देश्य से अंग्रेजी सेना खाकी रिसाला 17 जुलाई 1857 को जनपद बागपत के गांव बसौद पहुंचा। क्योंकि शाहमल व अन्य सेनानियों के बसौद गांव में होने की सूचना अंग्रेजों के पास पहुंच चुकी थी। खाकी रिसाला का उद्देश्य बसौद पर आक्रमण करके बागपत के वीरों को समाप्त करना व शाहमल को जिंदा या मुर्दा पकड़ने का था परंतु खाकी रिसाला के बसौद पहुंचने से पहले ही शाहमल अपने साथियों के साथ वहां से निकल गये। अंग्रेज बसौद गांव पहुंचे तो गांव वालों ने उनका कड़ा प्रतिरोध किया और अपनी अंतिम सांस तक अंग्रेजों को आगे नहीं बढ़ने दिया। अंततः संपूर्ण गांव ने स्वयं को आजादी की बलिवेदी पर बलिदान कर दिया। अंग्रेजों द्वारा सारे गांव को लूट लिया गया और उसमें आग लगा दी गयी। इसके पश्चात रात 12 बजे अंग्रेज सेना खाकी रिसाला बड़ौत को जाने के लिए आगे बढ़ गयी।<sup>1</sup> बसौद गांव में अंग्रेजों द्वारा किए गये नरसंहार का पता आसपास के गांवों के साथ-साथ शाहमल को भी चल चुका था। शाहमल के पास कोई स्थाई सेना तो थी नहीं, जो थी वो बागपत के गांवों के साधारण किसानों की ही सेना थी। किसान अंग्रेजों के विरुद्ध शाहमल के कंधे से कंधा मिलाकर अपना सर्वश्व न्यौछावर करने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। हथियारों के नाम पर इन किसानों के पास सिर्फ किसानों वाले पारंपरिक हथियार थे। फिर भी वह एक प्रशिक्षित सेना से लड़ने के लिए तैयार हो जाते थे। आवश्यकता पड़ने पर इन वीरवर किसानों को गांवों में संदेश भेजें जाते थे। जिसका पता चलते ही सभी गांवों के रणबांकुरे किसान एकत्र होना शुरू हो जाते थे। इन लोगों को संदेश भेजने का एक नायाब तरीका होता था, ढोल अथवा नगाड़ा। प्रत्येक गांव में ढोल अथवा नगाड़ा बजाया जाता था, उसकी आवाज सुनते ही दूसरे गांवों में भी ढोल

बजाया जाने लगता था। जहां तक भी इस ढोल अथवा नगाड़े की आवाज जाती वहां तक की जनता को यह स्पष्ट संदेश होता कि जल्दी ही एकत्र होना है। 17 जुलाई की रात को भी बागपत के गांवों में कुछ ऐसा ही नजारा देखने में आया था। जब खाकी रिसाला बसौद से बड़ौत की ओर चला तो चारों ओर ढोल, नगाड़ों की आवाज सुनाई दे रही थी। जो सभी दिशाओं में बजाये जा रहे थे। सारा देश उठ रहा था और एक बड़ी भीड़ को एकत्र होते देखा गया था।<sup>12</sup> बसौद में अंग्रेजों द्वारा किये गये नरसंहार के बाद बागपत में क्रांति का नेतृत्व कर रहे बाबा शाहमल और अन्य क्रांतिवीर किसान सेनानी भी यह समझ चुके थे, कि अब अंग्रेजों से निर्णायक युद्ध का समय आ चुका है या तो अब अंग्रेजों को समाप्त करना होगा या स्वयं का बलिदान करना होगा। इसके लिए क्रांतिवीर सेनानियों का एकत्र होना अनिवार्य था। ढोल और नगाड़ों के माध्यम से गांवों में परोक्ष रूप से सूचना दी जा रही थी। इसके अतिरिक्त 84 देश के हर गांव में शाहमल के दूत घूम रहे थे तथा सभी को अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने के लिए बुला रहे थे। उनसे कहा जा रहा था कि शाहमल व बागपत की क्रांति की सफलता के लिए वे सभी हथियार उठा लें। उस रात शाहमल ने घोषणा की “कि वह कल पीले चेहरे वाले विदेशी आक्रमणकारियों की पूरी सेना को समाप्त कर देंगे या इस प्रयास में खुद बलिदान हो जायेगें।”<sup>13</sup> शाहमल द्वारा अपने सभी साथियों को दिए गए ओजस्वी और देशभक्ति पूर्ण भाषण ने सभी में देशभक्ति के जज्बे का संचार किया। सभी किसान क्रांतिकारी अपने नेता के साथ मारने और मरने के लिए तैयार हो गए। सभी गांवों से नौजवान युवक शाहमल के नेतृत्व में अंग्रेजों के विरुद्ध निर्णायक संघर्ष में शामिल होकर अपना सर्वश्व न्यौछावर करने के लिए तत्पर हो गये। विलियम डनलप लिखता है कि अब शाहमल के आदेश पर लगभग 5000 किसान क्रांतिकारी एकत्र हो चुके थे।<sup>14</sup> इसके अतिरिक्त कीने महोदय ने शाहमल के नेतृत्व में लगभग 15000 किसान क्रांतिकारी होने की बात कही है।<sup>15</sup> अलग-अलग दस्तावेजों में शाहमल के साथ क्रांतिवीर किसानों की संख्या भी अलग-अलग ही दर्शायी गई है। फिर भी साक्षों का पक्षपात रहित आकलन करने पर यह बात सिद्ध हो जाती है कि शाहमल की सेना में 10 से 15 हजार के बीच क्रांतिवीर अवश्य ही रहे होंगे। जो उस समय के हिसाब से एक बहुत बड़ी संख्या थी। क्योंकि शाहमल न तो कहीं के नवाब ही थे और न ही कहीं के राजा, वो तो बस एक साधारण किसान थे। जो अंग्रेजों के शोषण से भारत के किसानों को बचाने और भारत भूमि को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराने के लिए अपना सर्वश्व न्यौछावर करने के लिए तैयार हो गये थे। उनकी देशभक्ति, उनके सहास और उनके संकल्प के कारण बागपत के सर्व समाज के लोग उनके साथ जुड़ते चले गये। “लोग आते गये और कारवां बनता गया”<sup>16</sup> मशहूर शायर मजरूह सुल्तानपुरी के ये लाइने बाबा शाहमल और उनकी किसान सेना पर बिल्कुल सटीक सिद्ध होती है।

बसौद में की गई विभूतिता के पश्चात खाकी रिसाला और खुद डनलप आश्वस्त था कि अब उन्हे किसी भी प्रकार के विद्रोह का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसलिए डनलप इस माहौल में राजस्व भी एकत्र करना चाहता था। जो इस क्षेत्र ने काफी दिनों से नहीं दिया था या बागपत के क्रांतिवीरों ने 10 मई के पश्चात किसी भी किसान द्वारा अंग्रेजों को राजस्व नहीं देने दिया था। डनलप अपनी पुस्तक खाकी रिसाला में लिखता है कि जब अंग्रेज सैनिकों की टुकड़ी पूर्वी यमुना नहर के किनारे से कुछ दूर चली गई तो मैंने उसी के समानांतर एक दूसरा रास्ता अपनाने का निर्णय लिया। तहसीलदार करम अली और दो अन्य सवार लेकर आस-पास के सभी गांवों का दौरा किया। क्योंकि मेरा इरादा उन सभी गांवों के लंबरदारों अथवा प्रमुख लोगों को गिरफ्तार करने का था। जिन्होंने अंग्रेजों को राजस्व का भुगतान नहीं किया था।<sup>17</sup> यह डनलप का अति आत्मविश्वास ही था कि वह अकेला ही कुछ सैनिकों और तात्कालिक बड़ौत तहसीलदार करम अली के साथ आसपास के गांवों में निढ़र होकर राजस्व एकत्र करने चल दिया था। वह जब आसपास के दो-तीन गांव में पहुंचा तो वहां जीवन का कोई चिन्ह नजर नहीं आ रहा था। सभी किसान अपने गांव से खुद को छुपाने के लिए परिवार सहित खेतों (जंगलों) की तरफ निकल गए थे। डनलप सबसे पहले जिस गांव में पहुंचा वह चौपड़ा था, जहां त्यागी ब्राह्मण रहते थे। (चौपड़ा गांव पूर्वी यमुना नहर पर बसौद से बड़ौत की ओर मात्र 2 किलोमीटर दूरी पर स्थित है) जब डनलप चौपड़ा पहुंचा तो उसे पूरे गांव में कोई भी नहीं मिला तथा पूरा गांव खाली था।<sup>18</sup> यहां एक ओर स्मरण योग्य बात यह है कि चौपड़ा और बसौद दोनों ही गांव एक ही गोत्र के हैं। हालांकि बसौद त्यागी-मुस्लिम तथा चौपड़ा त्यागी, ब्रह्मामणों का गांव है। फिर भी चौपड़ा के लिए बसौद वाले बड़े भाई की भाँति हुआ करते हैं। जनश्रुति कुछ ऐसी भी मिलती है कि बसौद की लड़ाई के समय चौपड़ा के बहुत से व्यक्ति उनकी मदद के लिए बसौद गए थे। जो कभी वापस घर लौट कर नहीं आये परंतु इस तथ्य का कोई लिखित प्रमाण प्राप्त नहीं होता। हालांकि एरिक स्टॉक लिखता है कि शाहमल को चौपड़ा गांव से मिला सहयोग बहुत आश्वर्यजनक है।<sup>19</sup> इससे यह भी सहज ही सिद्ध हो जाता है कि चौपड़ा गांव ने इस क्रांति में बाबा शाहमल की भरपूर मदद की थी। इसके पश्चात डनलप अपने दल के साथ आगे बढ़ा और अगला गांव था जाफराबाद नंगला, परंतु इस गांव को छोड़ दिया गया परंतु जाफराबाद के एक व्यक्ति को पकड़ा और उसे जमींदार को समझाने के लिए भेजा गया। इसके पश्चात डनलप अपने दल को लेकर एक ओर गांव बिचपड़ी में पहुंचा। जो गुर्जर बहुल गांव था और जिसने इस क्रांति में शाहमल का भरपूर सहयोग किया था। इस गांव को अंग्रेज सबक सिखाना चाहते थे तथा विनाश का पात्र समझता था। लेकिन इस समय अंग्रेजों के पास इस गांव से उलझने का समय नहीं था क्योंकि सेना के सामने एक लंबा सफर था। इसलिए इस गांव पर अंग्रेजों द्वारा हमला नहीं किया गया परंतु डनलप राजस्व एकत्र करने और गांव के लंबरदार को गिरफ्तार करने के लिए गांव में गया।<sup>20</sup> जैसे ही डनलप गांव में पहुंचा तो ऐसा लग रहा था कि सारा गांव ही अंग्रेजों के विरुद्ध खड़ा हो गया है। सभी नौजवान शाहमल की सहायता करने अथवा उसके आह्वान पर उसके साथ मिलने को उतावले

दिख रहे थे। डनलप देखता है कि एक बड़ी संख्या में हथियारबंद लोग वहां से निकल रहे थे। डनलप ने उन हथियारबंद लोगों का पता लगाने के लिए अपने एक नुजीब को भेजा परंतु जिसके पास वह गया, उसने उस नुजीब पर हमला कर दिया और उसे घायल कर दिया। जिसके परिणाम स्वरूप अंग्रेजों की ओर से गोलियां चलाई गई और उसे मार दिया गया। अब डनलप को इस क्रांतिकारी गांव से जाना ही उचित प्रतीत हुआ। उसने इस गांव के लंबरदार को गिरफ्तार करने का इरादा भी छोड़ दिया। गोलियों की आवाज सुनकर नहर किनारे पर स्थित अंग्रेज टुकड़ी डनलप की खोज व सहायता करने के लिए आयी परंतु वहां सब कुछ शांत देखकर और यह समझकर कि मामला मजिस्ट्रेट कार्रवाई द्वारा सुलझा लिया गया है, वह वापस लौट गयी।<sup>11</sup>

डनलप द्वारा दिए गए उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि बिचपड़ी गांव के लोग क्रांति में शामिल थे। उन्होंने क्रान्तिकारियों का साथ दिया व भरपूर मदद भी की थी। यह गुर्जर बहुल गांव तन, मन, धन से अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तत्पर था। इसके पश्चात डनलप राजस्व एकत्र करने के इरादे से आगे बढ़ा और रास्ते में पड़ने वाले हर गांव से एक या दो लंबरदारों को गिरफ्तार कर लेता। इसी क्रम में वह घुटिया (सम्भवतः गठिना), सदुल्लापुर, अलावलपुर व इदरीशपुर से भी गुजरा, डनलप लिखता है कि ये गांव तहसीलदार को देखकर खुश दिखे और मेरा मानना है कि उनका हमारे (अंग्रेजों के) प्रति अच्छा व्यवहार था। इसी लंबरदारों को गिरफ्तार करने तथा गांवों का दौरा करने के क्रम में डनलप अंग्रेजों के वफादार गांव बड़का पहुंचा। इस समय डनलप के पास अच्छे-खासे लोग जमा हो चुके थे। जब अंग्रेज बड़का पहुंचे तो बड़का के लोग जो अपनी गद्दारी की वजह से क्रांतिकारियों से डर कर अपने घरों में छुपे हुए थे। अपने घरों के दरवाजे खोलकर घरों से बाहर आने लगे व तहसीलदार को पहचान कर बहुत धीमी आवाज में फुसफुसाकर कहने लगे की जितनी जल्दी हो सके वह अपने साथियों के साथ यहां से चले जायें, क्योंकि शाहमल द्वारा हम पर हमले के लिए पूरे 84 देश को खड़ा किया जा रहा है। इसके पश्चात बड़का के लोग कुछ सामान्य हुए और बातचीत के दौरान जब ये हसं बोल रहे थे और शाहमल का अभद्रता से मजाक उड़ा रहे थे उसी दौरान बड़का का पड़ोसी गांव हिलवाड़ी जो बिल्कुल बड़का से लगा हुआ है, उस दिशा से एक बहुत बड़ा भारी शोर सुनाई देने लगा। जो निरंतर नजदीक का आता प्रतीत हो रहा था। जैसे ही शोर शुरू हुआ वैसे ही डर के मारे बड़का वाले तुरंत अपने गांव में जाकर गायब हो गए और सभी ने अपने-अपने दरवाजे बंद कर लिये। तभी शाहमल अपने लगभग 2000 साथियों के साथ डनलप की ओर तेजी से आता दिखायी दिया। डनलप के साथ जो गिरफ्तार किये लंबरदार थे वह भी बहुत घबरा रहे थे। तभी तहसीलदार करमअली ने चुपचाप वहां से भाग निकलने की सलाह डनलप को दी। क्योंकि इस समय शाहमल की स्थिति काफी मजबूत दिख रही थी। तभी गोलीबारी शुरू हो गई और वह भीड़ बिल्कुल अंग्रेजों के पास आ पहुंची। डनलप अपनी छोटी सी सेना के साथ किसी तरह वहां से पीछे हटा और अपनी जान बचाई, परंतु डनलप की यह गलतफहमी बहुत जल्दी ही दूर हो गई, क्योंकि तभी घोड़े पर सवार भगता अथवा भगत सिंह जो शाहमल का भतीजा तथा वह दिल्ली सम्राट बहादुर शाह जफर का एक सेनापति भी रहा था। उसने डनलप पर भीषण आक्रमण किया। वह एक हाथ में नंगी तलवार, दूसरे हाथ में बंदूक लिए था। डनलप भगता के इस हमले में किसी तरह बाल-बाल बचा और जान बचाकर वहां से भाग निकला। वह किसी प्रकार बड़ौत अपनी अंग्रेज सेना के पास पहुंच गया।<sup>12</sup> डनलप जब बिचपड़ी, हिलवाड़ी आदि गांवों से निकला तो उसने स्पष्ट रूप से अंग्रेजों के प्रति विद्रोह के चिन्ह देखे थे। इन गांवों के विद्रोह पूर्ण व्यवहार को देखते हुए डनलप ने बाद में लिखा था कि डौला छोड़ते समय मुझे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि डौला और बड़ौत के बीच के गांवों में असंतोष किस हद तक पहुंच गया था।<sup>13</sup> डनलप हिलवाड़ी के पास भगता के साथ हुई झड़प से बहुत घबरा गया था। वह बापुश्किल अपनी जान बचाने में सफल रहा था। जबकी पहले डनलप ने सोचा था कि इन गांव में लोग अंग्रेजों का स्वागत करेंगे तथा अंग्रेजों के प्रति अपनी निष्ठा का प्रदर्शन करेंगे, पर बहुत जल्दी ही उसका यह भ्रम टूट गया था। डनलप का दल अपने आप को किसी प्रकार बचाकर लगभग तीन मील दूर बड़ौत की ओर भागने में सफल रहा। जब डनलप अपने छोटे से दल के साथ बड़ौत पहुंचा तो उसने देखा की खाकी रिसाला पर किसान रूपी विद्रोही पहले ही हमला कर चुके हैं। विद्रोही बड़ौत और मलकपुर के थे।<sup>14</sup> इनका नेतृत्व मलकपुर का रहने वाला एक सफेद दाढ़ी वाला बूढ़ा सिख कर रहा था। उसने बंदूक चलाने के बार-बार किया जा रहे अपने प्रयास से खुद को विशिष्ट बना लिया था।<sup>15</sup> इस किसान और अंग्रेजों के मध्य होने वाली झड़प के बाद हालांकि वह दाढ़ी वाला सिख बचकर चला गया था। डनलप लिखता है कि कुछ महीने बाद जब मैं पुनः बड़ौत की यात्रा पर था तब मैंने इस दाढ़ी वाले सिख को पहचान लिया और उसे पकड़ कर तुरंत फांसी पर लटका दिया गया था।<sup>16</sup> इस प्रकार भागपत के एक ओर महान क्रान्तिकारी का बलिदान हो गया। जिसने भारत को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराने के लिए अपने प्राणों का हसंते-हसंते उत्सर्ग कर दिया। खाकी रिसाला के साथ इन किसानों की झड़प में हथियार और आमने-सामने के युद्ध में किसानों के प्रशिक्षित ना होने के कारण, वह खाकी रिसाला के सामने ज्यादा समय नहीं ठहर पाये और खाकी रिसाला ने इन्हे पीछे हटने पर मजबूर कर दिया था। इस झड़प में तीस से अधिक किसान लड़ाकों को मार डाला गया था।<sup>17</sup> मेरठ गजेटियर 1904 भी इसकी पुष्टि करता हुआ लिखता है कि इस झड़प में 30 से अधिक लोग मारे गये।<sup>18</sup>

## युद्ध का विवरण-

इस प्रकार बागपत के सेनानियों के साथ अंग्रेज सेना के निर्णायक युद्ध से पहले किसानों के द्वारा अंग्रेजों पर किए गये इस आक्रमण में किसानों को काफी नुकसान उठाना पड़ा था। इस छोटे युद्ध में जो किसान बच गए थे वह जाकर अपनी मुख्य सेना से मिल गये। इसके बाद बागपत में क्रान्ति के नेतृत्वकर्ता और सूबेदार शाहमल ने अपनी किसान सेना का स्वयं नेतृत्व करने का फैसला किया। अंग्रेज सेना खाकी रिसाला और किसान सेना के मध्य एक भयंकर युद्ध आरम्भ हुआ। इसे आप मेरठ की धरती का दूसरा युद्ध भी कह सकते हैं। यह हमला एक आम के बाग में हुआ था। जिसमें आम के बड़े-बड़े पेड़ थे तथा आगे की ओर एक तालाब था। लेकिन यह किसान सेना अंग्रेजों की प्रशिक्षित सेना के सामने ठहर नहीं पा रही थी। जिसने सामने से गोलीबारी करते हुए दोनों ओर से हमला किया था।<sup>19</sup> यह युद्ध का स्थान बड़का गांव से बाहर एक जंगल था। जिसे बेहा का जंगल भी कहा जाता है। इस समय खेतों में ईख और मर्कई (मक्का) की फसल चारों तरफ लहलहा रही थी। यह जंगल भी अपने आप को बहुत खुशनसीब मानता होगा जहां धरती पुत्र किसानों ने अपने देश की माटी, देश की स्वतंत्रता व आन, बान, शान के लिए अपने रुधिर से इसे लाल कर दिया था। इस समय शाहमल के नेतृत्व में कम से कम दो हजार शक्तिशाली, मर मिटने को आतुर किसान सेनिक थे। हालांकि शाहमल गुरिल्ला प्रणाली से युद्ध करने में तो दक्ष थे, परंतु आमने-सामने के युद्ध लड़ने में, जिसमें प्रशिक्षित सेना की आवश्यकता पड़ती है उनमें या उनकी सेना में यह क्षमता नहीं थी। अंग्रेजों ने इस विद्रोही नेता को पकड़ने या उसका सर काट कर लाने पर एक हजार रूपये का इनाम भी घोषित किया था।<sup>20</sup> यद्यपि शाहमल और उसके किसान सेनानियों को आमने-सामने के युद्ध का न तो कोई अनुभव था और न ही प्रशिक्षण, फिर भी अपने नेतृत्वकर्ता 60 वर्षीय 'युवा' बाबा शाहमल के नेतृत्व में अपनी जी-जान लगाकर उन्होंने अपने अंतिम पलों तक संघर्ष किया। किसान रूपी सेनिक, निर्भीकता और अपनी पूरी ताकत से लड़ रहे थे। किसानों के इस प्रकार के जौहर देखकर अंग्रेज भी दंग रह गए। शाहमल स्वयं घोड़े पर सवार होकर अपनी सेना का आगे बढ़कर नेतृत्व कर रहा था और भयंकर मार-काट मचा रहा था परंतु आज भाग्य शाहमल और किसान सेनिकों के पक्ष में नहीं था। चारों तरफ लहू की धारा बह रही थी और अंततः इस युद्ध में वीर शिरोमणि बाबा शाहमल वीरगति को प्राप्त हुए।<sup>21</sup> शाहमल की अंतिम लड़ाई और उनके वीरगति प्राप्त होने के विषय में एम.के. गांधी लिखते हैं कि लड़ते-लड़ते शाहमल चारों ओर से अंग्रेजों से घिर गये, अचानक लड़ते-लड़ते उनके हाथों से उनकी तलवार निकल गई, परंतु फिर भी वीरवर शाहमल ने हिम्मत नहीं हारी और अपने भाले से अंग्रेजों से लड़ता रहा, अचानक उनके सिर पर बंधी पगड़ी खुल गई और खुलकर घोड़े के पैरों में उलझ गई इसका लाभ उठाकर एक अंग्रेज ने उन्हें घोड़े से गिरा दिया इससे पहले वह संभल पाते वह घांवों से लहूलुहान हो चुके थे और अंग्रेज अधिकारी पार्कर ने वीरवर शाहमल के शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए व उसका सर काट कर प्रदर्शनी के लिए अपने भाले पर टांग लिया।<sup>22</sup>

इसके अतिरिक्त शाहमल को मारने का उनलप ने जो वर्णन किया है वह कुछ इस प्रकार है कि हमारे दल के दो सदस्यों जिनमें एक भारतीय था तथा दूसरे का नाम टोनची था, जिनका का एक विद्रोही से युद्ध हो रहा था। जिसकी शाहमल होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। मैं उस समय युद्ध के बाये किनारे पर खड़ा था। इस घनघोर युद्ध में टोनची नामक यूरोपियन घुड़सवार भी घायल हो गया था परंतु अन्त में विद्रोही मारा गया। जो शाहमल था। सूर्य उस समय बहुत खतरनाक अवस्था में था। अर्थात् गर्मी बहुत ज्यादा बढ़ चुकी थी। अतः शाहमल का सर काटकर एक खंभे पर टांग लिया गया। यह देखकर बड़ौत के हमारे स्थानीय मित्रों (अर्थात् देश के गद्वारों) को भय और संतुष्टि का मिश्रित अहसास हुआ।<sup>23</sup> काफी बड़ी संख्या में किसान सेनानी इस युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए। शाहमल के वीरगति प्राप्त होने के बाद उनलप आराम से यह सोचकर अपने शिविर में तहसीलदार के साथ जा बैठा था कि अब तो युद्ध समाप्त हो चुका है। तभी फिर से भयंकर गोलीबारी की आवाज सुनायी दी। उनलप व उसके साथियों को मजबूर होकर दोबारा घटनास्थल पर जाना पड़ा। जहां उन्होंने देखा कि विद्रोही किसानों ने अंग्रेजों पर दोबारा हमला कर दिया था। यह इस दिन का तीसरा हमला था। शायद इन विद्रोही किसानों को अपने सेनापति शाहमल की मृत्यु का पता चल चुका था। उन्होंने खंभे पर टंगे शाहमल के सर को देख लिया था। जिससे उन्हें आसानी से खदेड़ा जा सका। शाहमल और उसकी विद्रोही सेना पराजित हो चुकी थी। जिसे देखकर बड़ौत के बनिया खुशी से अंग्रेजों के लिए बहुत सा सामान लेकर गए। उस समय पूर्वी यमुना नहर के एक उपअधीक्षक के बंगले में और उसके आसपास उनलप व अंग्रेजी सेना ने डेरा डाला था।<sup>24</sup> अंग्रेजों और बागपत के क्रांतिवीरों के बीच इस घमासान युद्ध में अंततः क्रान्तिकारियों के नेतृत्वकर्ता बाबा शाहमल और बहुत से क्रांतिवीर किसानों का बलिदान हुआ। यह घटना 18 जुलाई 1857 को घटित हुई और 21 जुलाई 1857 को तार द्वारा अंग्रेज उच्च अधिकारियों को सूचना भेजी गई थी, कि मेरठ से आये खाकी रिसाला के विरुद्ध लड़ते हुए बागपत में क्रांति के नेतृत्वकर्ता शाहमल अपने 6000 साथियों के साथ मारा गया।<sup>25</sup>

कीथ यंग ने 20 जुलाई में अपनी पत्नी को पत्र लिखकर यह बताया कि मेरठ से जो अंग्रेजी बल बागपत गया था, उससे लड़ते हुए शाहमल और उसके 600 साथी मारे गए हैं। शाहमल पिछले सभी उपद्रवों का मुख्य नेता रहा है। यह हमारे पास लिखित सूचना तो नहीं है पर मूल निवासियों ने कहा है कि अभियान पूरी तरह सफल रहा है और शाहमल के बेटे को भी बंदी बना लिया गया है।<sup>26</sup>

जबकि मेरठ गजेटियर 1904 में उल्लेखित है कि अंग्रेज और बागपत के किसान विद्रोहियों के मध्य हुए युद्ध में 3500 विद्रोही मारे गये थे। अंग्रेजों की ओर से केवल एक मौत हुई और कुछ घायल हुए जिसमें मिस्टर टोनची भी थे। जो शाहमल के साथ युद्ध में भाला लगने से घायल हो गए थे।<sup>27</sup>

इसके अतिरिक्त अंग्रेज लेखक एरिक स्टॉक के लेख में भी इस युद्ध का वर्णन और इसमें हताहत होने वालों की संख्या मिलती है। एरिक स्टॉक लिखता है कि ऑफिसर कमांडिंग मेजर जी. विलियम के पास शाहमल की विशाल किसान सेना जिसकी अनुमानित संख्या 3500 थी का सामना करने के लिए बामुश्किल समय था। लड़ाई भयंकर रूप ले चुकी थी लेकिन 60वीं राइफल के 40 यूरोपियन जो एनफील्ड बंदूक से लैस थे और अपने पाश्व में स्वयंसेवी घोड़े के साथ संघर्षरत पंक्ति में आगे बढ़ रहे थे व घातक मार-काट मची हुई थी। तभी किसानों की देहाती बंदूकें खाली हो गईं और उन्हें दोबारा भरने का समय नहीं मिल पाया। जिससे शाहमल के किसान विद्रोही टूट कर भाग खड़े हुए। जिसमें से लगभग 200 लोग मारे गए उनमें शाहमल भी शामिल था।<sup>28</sup>

उपरोक्त चारों ही विवरणों में विद्रोही सेनिकों (क्रान्तिकारियों) के वीरगति प्राप्त करने की अलग-अलग संख्या दी हुई है और उपरोक्त चारों ही लेख अंग्रेज अधिकारियों के लिखे हुए हैं। इस आधार पर यह भी कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि अंग्रेज अधिकारियों के लेख भी प्रमाणिक नहीं हैं और उन्होंने भारतीय जनता को गुमराह करने के लिए अपने लेखों में बढ़ा चढ़ा कर पेश किया है। फिर भी क्रान्तिकारियों की एक बड़ी संख्या ने इस युद्ध में वीरगति पायी थी।

शाहमल के बलिदान के पश्चात उसके शव से पेंगा गांव (जो वर्तमान मोदीनगर तहसील जनपद गाजियाबाद में है) के सलेकराम और लाल मुर्झिन नाम के व्यक्तियों का एक पत्र प्राप्त हुआ था, जिसमें किसान क्रांतिकारियों पर अंग्रेजों द्वारा आक्रमण होने की बात कही गई थी। इस पत्र में मेरठ से प्राप्त सूचना के आधार पर अंग्रेज सेना में कितने सेनिक हैं यह भी सटीक जानकारी दी गई थी। बाद में इन दोनों क्रांतिवीरों को भी फांसी पर लटका दिया गया।<sup>29</sup>

अंत में एक तथ्य पर चर्चा समयानुसार उचित प्रतीत होती है कि बहुत से भारतीय लेखकों तथा अंग्रेज लेखकों ने एक बात पर विशेष जोर दिया हुआ प्रतीत होता है, वह है शाहमल के कटे हुए सर की प्रदर्शनी करना। कुछ स्थानों पर लिखा मिलता है कि शाहमल का सर काट कर भाले पर टांग कर गांव-गांव घुमाया गया, जिससे जनपद बागपत के निवासियों में भय उत्पन्न किया जा सके, परंतु स्वयं डनलप अपनी किताब खाकी रिसाला में तथा अन्य अंग्रेजों के विवरण में यह पता चलता है कि उसी रात 18 जुलाई को ही डर की वजह से खाकी रिसाला मेरठ भाग खड़ा हुआ था। डनलप लिखता है कि आधी रात को ही बंगले के आसपास सो रहे लोगों को चुपचाप जगाने के लिए संदेश भेजा गया और 1 घंटे के अंदर पूरी अंग्रेज सेना वहां (बड़ौत) से चुपचाप निकल गयी। सही मार्गदर्शन करने के लिए तहसीलदार करमअली को भी साथ ले लिया गया था। जिससे जल्दी-जल्दी यहां से निकला जा सके और हर्रा पार करके सरधना जाया जा सके।<sup>30</sup>

इससे पता लगता है की शाहमल के बलिदान के पश्चात अंग्रेज सेना बहुत घबरा गई थी कि कहीं सारा बागपत, बड़ौत क्षेत्र एकत्र होकर उन पर आक्रमण ना कर दे। इसलिए वह उसी रात के घने अंधेरे में बड़ौत से निकल गये। नैरेटिव ऑफ इवेंट में विवरण मिलता है कि खाकी रिसाला के कमांडिंग ऑफिसर मेजर विलियम को रात से पहले ही प्रमाणिक जानकारी प्राप्त हुई थी कि अगले दिन जाटों (अर्थात् सभी समुदाय के किसानों) की एक बड़ी सभा का आयोजन किया जाएगा और उन पर बड़ा हमला होगा। पिछले दिनों काफी वर्षा होने के कारण नदियों का जलस्तर लगातार बढ़ रहा था। जिसकी वजह से मेरठ और बागपत के बीच बाढ़ की स्थिति भी बन चुकी थी। उच्च अधिकारियों को दिन की सफलता की रिपोर्ट करते समय कमांडिंग ऑफिसर विलियम ने अनुरोध किया था कि उन्हें सफलता पूर्वक यहां से बच निकलने के लिए कुछ और सेना भेजी जाये जिससे वह अगले दिन हिंडन नदी पार करके वहां अपना डेरा डाल सके जिसे उच्च अधिकारियों द्वारा अस्वीकार कर दिया गया था। अंग्रेजों की छोटी सी सेना आधी रात से कुछ पहले अपने शिविर से चुपचाप निकालकर आगे बढ़ी और पानी से भरे देश के मध्य से एक अत्यंत कठिन यात्रा के बाद हिंडन और कृष्णा नदी को पार करके हर्रा में रुकी।<sup>31</sup>

इससे सिद्ध होता है कि पूरा दिन अंग्रेज और बागपत के क्रांतिवीर किसानों के मध्य भयंकर युद्ध हुआ था। जिसमें अनेक भारतीय वीरों सहित शाहमल भी वीरगति को प्राप्त हुआ और शाम को बड़ौत के डाक बंगले पर अंग्रेजों ने अपना डेरा डाल दिया था। रात को ही अंग्रेज सेना डर के कारण यहां से भाग खड़ी हुई थी। तो यह कैसे संभव है कि वीरवर शाहमल का सर गांव-गांव घुमाया गया हो। हां यह आवश्य ही हुआ था कि शाहमल के शव के साथ अंग्रेजों ने बुरा व्यवहार किया होगा। उस वीरवर का सर भी काटा गया तथा भाले पर टांगा भी गया पर सिर्फ अंग्रेज सेना को दिखाने के लिए की बागपत में क्रांति की बागडोर संभाल रहे शाहमल को मार दिया गया है। ना ही तो वीरवर शाहमल के सर की कोई प्रदर्शनी ही लगाई गई और ना ही उसका सर गांव-गांव घुमाया ही गया था। कहा जाता है कि किसानों ने 21 जुलाई को शाहमल का दाह संस्कार किया था। वीर शिरोमणि शाहमल और अनगिनत अनाम, अज्ञात किसान सेनानियों के बलिदान

होने के बाद भी बागपत में संघर्ष जारी रहा था तथा बागपत के किसानों ने हार नहीं मानी थी। स्वतंत्रता प्राप्त करने तथा अंग्रेजों को यहां से भगाने के लिए जो विश्वपटल पर हम बागपत वासियों को गौरव का अनुभव कराता रहता है। यह एक 60 वर्षीय "नौजवान" के नेतृत्व व किसान सेनानियों की पोरूष गाथा है। जिसने अंग्रेजों को हत्याकांश कर दिया परन्तु यह भी एक अटल सत्य है कि अगर कुछ अपनों ने ही गद्दारी न की होती तो आज भारत वर्ष का इतिहास कुछ और होता। जिन्होंने अंग्रेजों से लड़ते-लड़ते अपना बलिदान कर दिया थे किसान रूपी सेनानी और इनके मुखिया भी बच सकते थे। इनके गांव भी बागी नहीं होते, अगर इन्होंने भी अपने ईमान का सौदा अंग्रेजों से कर लिया होता और देशभक्ति छोड़कर अपने वतन भारत के साथ गद्दारी कर, ब्रिटिश हुक्मत का साथ दिया होता। पर उन्होंने ऐसा नहीं किया और देश और आने वाली नस्लों के लिए अपना सर्वश्व न्यौछावर कर दिया। इस सत्य को भी नहीं नकारा जा सकता-

उनकी तुरबत पर नहीं है एक भी दिया

जिनके खून से जलते थे चिराग-ए-वतन

और

जगमगा रहे हैं मकबरे उनके उनके

जो बेचा करते थे शहीदों के कफन।<sup>32</sup>

इस क्रांति में अनेक परिवारों ने अपने लाल गवायें जिनका नाम भी आज ज्ञात नहीं है। यह बहुत बड़ी विडंबना है कि हमारे भविष्य के लिए जिन हमारे पूर्वजों ने अपना लहू बहाया अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। आज हम उनके नाम भी भूले बैठे हैं। अगर हम शोध के माध्यम से बागपत के क्रांतिकारियों के कुछ नाम भी अपनी जनता और देश के सामने ला पाए तो यह हमारी उन वीरों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। नमन है बागपत की धारा को जिसने अपने आंचल में ऐसे वीरों को पाला और स्थान दिया, नमन है सभी उन क्रांतिकारियों को जिन्होंने हंसते-हंसते अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया, नमन है उन बलिदानियों के परिवारों को जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपने लाल भारत मां की बलिवेदी पर भेंट कर दिए।

### निष्कर्ष-

1857 की क्रान्ति भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह वह समय था जब दूरसंचार के साधन भी बहुत सीमित थे। दूरसंचार के साधन कम होते हुए भी जिस प्रकार इसका प्रसार हुआ वह अपने आप में एक बहुत आश्वर्यजनक तथ्य है। 10 मई 1857 को मेरठ के सदर बाजार और देशी सेना के परेड मैदान से शुरू होकर यह बहुत तीव्र गति से गांवों में फैल गयी। उस समय मेरठ का ही अंग रहे वर्तमान जनपद बागपत के नानियों ने भी इसका पता लगते ही 11 मई में ही अंग्रेजों के विरुद्ध हथियार उठा लिए। ये सेनानी कोई ओर नहीं बागपत के गांवों के किसान थे। इन्होंने अपने पराक्रम से जल्द ही बागपत को अंग्रेजों के प्रभाव से मुक्त करा लिया व अपने स्वाशासन की स्थापना कर दी। 11 मई से लेकर 18 जुलाई तक और उसके बाद तक भी यहा बागपत के वीरों का शासन रहा। इन बागपत के वीरों ने वह कर दिखाया जो साधारणतः सोचना भी कठिन होता था। इन्होंने बागपत को अंग्रेजों से मुक्त तो कराया ही साथ ही स्वयं को दिल्ली के आपूर्ति क्षेत्र के रूप में भी स्थापित किया। अगर अंग्रेजों को दिल्ली में अपना शासन दोबारा स्थापित करना था, तो उनके लिए इस बागपत क्षेत्र को जीतना बहुत आवश्यक हो गया था। अतः अंग्रेजों ने बागपत को विजित करने और अपनी सत्ता पुनः स्थापित करने के लिए अंग्रेजी सेना खाकी रिसाला को बागपत के क्रान्तिकारी का दमन करने के लिए भेजा। इस सेना ने 17 जुलाई 1857 को क्रान्तिकारी गांव बसौद को तहस-नहस कर डाला। बसौद गांव के सभी लोगों ने अपने आप को बलिदान कर दिया। इसके पश्चात खाकी रिसाला और बागपत की किसान सेना के मध्य गांव बड़का के बेहा नामक जंगल में आमने-सामने का एक भयानक युद्ध हुआ। जिसमें एक बारगी तो अंगेज सेना के पैर उखड़ गये थे परन्तु अन्ततः इस युद्ध में बागपत के क्रान्तिकारी सेनानी वीरगति को प्राप्त हुए। इसे मेरठ भूमि का दूसरा युद्ध कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। इस युद्ध में बागपत में क्रान्ति के नेतृत्वकर्ता शाहमल के साथ-साथ हजारों की संख्या में सेनानी बलिदान हुए। इस युद्ध में बागपत के किसान सेनानियों की हार के कई कारण थे जिनमें आधुनिक हथियारों की कमी, किसान सेना को आमने-सामने के युद्ध का प्रशिक्षण न होना और सबसे अहम डौला के गद्दार नवल सिंह, गद्दार करम अली जैसों का अंग्रेजों का साथ देना प्रमुख थे। जिनकी गद्दारी के कारण बहुत सी माताओं की कोख उजड़ गयी, हजारों महिलाओं की मांग सूनी हो गयी और अनेकों बच्चे यतीम हो गये। यह युद्ध बागपत के इतिहास का एक अमिट अध्याय है, जो एक बार फिर बागपत के वीरों की एक जुट्टा, वीरता और पराक्रम का प्रत्यक्षदर्शी बना। नमन है, उन सभी अनाम, अज्ञात वीरों को जिन्होंने हमारे भविष्य के लिए अपना वर्तमान कुर्बान कर दिया।

सन सत्तावन में युद्ध बेहा का, गजब हुआ घनघोर हुआ।  
साहस बागपत के वीरो का, फिर भी न कमजोर हुआ॥  
रिसाले से ज्यादा चोट पहुंचायी, नवलसिंह व करमअली जैसो की गद्वारी ने।  
बलिदान हुए हजारो समर में, ना उनके जीवन का फिर भौर हुआ॥

### सन्दर्भ सूची

1. डनलप वालेस हेनरी रार्बट, सर्विस एण्ड एडवेन्चर विद खाकी रिसाला, रिचर्ड बेन्टली, न्यू बुरलिंगटोन स्ट्रीट, लन्दन, 1858, पृ० 95।
2. फ्रॉम एफ. विलियम्स, टू विलियम म्यूर, नेरेटिव ऑफ इवेंट्स ऑफ अटैंडिंग द आउट ब्रेक ऑफ डिस्टर्बेंसस एण्ड द रेस्टोरेशन ऑफ अथॉरिटी इन द डिस्ट्रिक्ट ऑफ मेरठ, इन 1857-58, नवम्बर 1858, पृ० 43।
3. डनलप वालेस हेनरी रार्बट, खाकी रिसाला, पूर्वोक्त, पृ० 95।
4. पूर्वोक्त।
5. कीने हेनरी जार्ज, फिप्टी सेवन: सम अकाउन्ट ऑफ दा एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ इंडियन डिस्ट्रीक्ट डुरिंग दा रिवोल्ट ऑफ दा बंगाल आर्मी, डब्ल्यु. एच. ऐलन, लन्दन, 1883, पृ० 29।
6. Zee news, 11 jun 2022, <https://zeenews.india.com/hindi/zeesalaam/news/mai-akela-hi-chalatha-janib-e-manzil-majrooha-sultanpuri-urdu-poetry-smzs/1067782>
7. डनलप वालेस हेनरी रार्बट, खाकी रिसाला, पूर्वोक्त, पृ० 96।
8. पूर्वोक्त, पृ० 97।
9. स्टोक्स ऐरिक, द पीसेन्ट आर्मड द इण्डियन रिवोल्ट ऑफ 1857, कलारेन्डोन प्रेस, आक्सफोर्ड, 1986, पृ० 168।
10. डनलप वालेस हेनरी रार्बट, खाकी रिसाला, पूर्वोक्त, पृ० 97।
11. पूर्वोक्त, पृ० 97-98।
12. पूर्वोक्त, पृ० 99-103।
13. स्टोक्स ऐरिक, द पीसेन्ट आर्मड द इण्डियन रिवोल्ट ऑफ 1857, पूर्वोक्त, पृ० 163।
14. पूर्वोक्त।
15. डनलप वालेस हेनरी रार्बट, खाकी रिसाला, पूर्वोक्त, पृ० 104।
16. पूर्वोक्त।
17. फ्रॉम एफ. विलियम्स, टू विलियम म्यूर, नेरेटिव ऑफ इवेंट्स, पूर्वोक्त, पृ० 43।
18. नेविल एच. आर., डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स ऑफ दि यूनाइटेड प्रोविन्सिज ऑफ आगरा एण्ड अवध, गजेटियर ऑफ मेरठ, 1904, पृ० 178।
19. गाँधी ए० के०, 1857 क्रान्ति व क्रान्तिधरा, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II बसंत कुंज, नई दिल्ली, 2016, पृ० 69।
20. डॉ उपाध्याय विश्वमित्र, सन् सत्तावन के भूले-बिसरे शहीद, भाग 2, प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पृ० 11।

21. डॉ० शर्मा महेन्द्र नारायण और डॉ० राकेश शर्मा, सन् सत्तावन का क्रान्तिवीर बाबा शाहमल जाट, पब्लिसर दि जनरल ऑफ दि मेरठ युनिवर्सिटी हिस्ट्री एलुमिनी, पृ० 63।
22. गाँधी ए० के०, 1857 क्रान्ति व क्रान्तिधरा, पूर्वोक्त, पृ० 69।
23. डनलप वालेस हेनरी रार्बट, खाकी रिसाला, पूर्वोक्त, पृ० 106।
24. पूर्वोक्त, पृ० 107।
25. प्रेस लिस्ट आफ म्युटिनी पेपर्स, 1857-58, पृ० 166।
26. यंग कीथ एण्ड सर नोरमन हेनरी वाईली, दिल्ली 1857, लन्दन 1902, पृ० 141।
27. नेविल एच. आर., डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स मेरठ, 1904, पूर्वोक्त, पृ० 178।
28. स्टोक्स ऐरिक, द पीसेन्ट आर्मड द इण्डियन रिवोल्ट ऑफ 1857, पूर्वोक्त, पृ० 163।
29. डॉ० उपाध्याय विश्वमित्र, सन् सत्तावन के भूले-बिसरे शहीद, पूर्वोक्त, पृ० 11।
30. डनलप वालेस हेनरी रार्बट, खाकी रिसाला, पूर्वोक्त, पृ० 108।
31. फ्रॉम एफ. विलियम्स, टू विलियम म्यूर, नेरेटिव ऑफ इवेंट्स, पूर्वोक्त, पृ० 44।
32. डॉ० मिततल एस. के., डॉ० शर्मा के. डी., डॉ० पाठक अमित, साझी शहादत के कुछ फूल 1857, नेहरू युवा केन्द्र संगठन, नई दिल्ली, पृ० 106।